मेहनत से बढ़ाई आय की 'सीमा'
मसाला और सब्जी उत्पादन से आय 5-6 लाख

सीमा डांगी
बानौर, झालावाड़, राजस्थान
मो.: 9799883546

खेती के विकास में महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। परम्परागत खेती में वह पुरुषों से ज्यादा काम करती हैं। खेत में बीज बोने से लेकर उनके संरक्षण-संवर्धन और भण्डारण का काम करती हैं। पशुपालन से लेकर विविध तरह की सब्जियां लगाने में महिलाओं का योगदान होता है। सीमा डांगी की बात करें तो इन्होंने समाज की दूसरी महिलाओं के सामने एक उदाहरण पेश किया हैं। गौरतलब है कि परिवार की परवरिश के साथ खेती की जिम्मेदारी संभालने वाली यह महिला मसाला और सब्जी फसल उत्पादन से 5-6 लाख रूपए सालाना कमा रही है। तदबीर से ही तकदीर बनाई जाती है। अगर आपको इन बातों पर भरोसा नहीं हो तो आप सीमा डांगी से मिलिए। झालावाड़ जिले के बनौर गांव में रहने वाली इस महिला किसान ने कृषि उत्पादन के क्षेत्र में ऐसी उपलब्धि हासिल की है, जो बड़े-बड़े किसान नहीं कर पाते हैं। गौरतलब है कि यह महिला किसान मसाला और सब्जी फसल उत्पादन से 5-6 लाख रूपए की सालाना शुद्ध आय ले रही है। मध्यप्रदेश के निसानिया गांव में जन्मी इस महिला किसान का विवाह बनौर निवासी प्रकाश डांगी से हुआ। ससुराल वालो के पास 6 बीघा कृषि भूमि है। परिवार बड़ा होने और कृषि भूमि कम होने के चलते पति कृषि से स्नातक करने के उपरांत एक आदान प्रदाता कंपनी में नौकरी करने लग गया। ऐसे में जमीन को संभालने वाला कोई नहीं रहा। महिला किसान का कहना है कि उपजाऊ जमीन की दुर्दशा होते मैं नहीं देख सकती थी। आठवीं पास थी। इसलिये कृषि से जुड़ी वैज्ञानिक बातों को आसानी से समझ सकती थी। पढ़ाई और पैतृक कृषि हुनर के हौंसले के चलते कृषि की बागड़ोर संभाली। परिणाम सबके सामने है। इस महिला की कृषि सफलता में वैज्ञानिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कृषि विज्ञान केन्द्र, झालावाड़ के द्वारा आयोजित होने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने के बदौलत इस महिला किसान ने परम्परागत फसल चक्र को पूरी तरह से बदल दिया। साथ ही, वर्ष 2012 में मसाला और सब्जी फसलों के सहारे सफलता की इबारत लिखना

शुरू किया। सीमा के द्वारा कृषि विविधीकरण का परिणाम है कि एक लाख रूपये तक सीमति आय बढ़कर 5-6 लाख रूपये हो चुकी है।

पशुधन से आय

पशुधन में मेरे पास 2 मुर्रा नस्ल की भैंस और एक बैल जोड़ी है। प्रतिदिन 16 लीटर दुग्ध का उत्पादन मिल जाता है। दुग्ध के औसत भाव 35 रूपये प्रति लीटर मिल जाते है। दुग्ध का विपणन डेयरी को कर रही हूँ।

फसल विविधीकरण

उन्होंने बताया कि 2 बीघा क्षेत्र में वैज्ञानिक तकनीक से लहसुन की बुवाई करती हूँ। लहसुन के मध्य में ही कद्दू की बुवाई कर देती हूँ। मार्च में लहसुन पककर तैयार हो जाता है। वहीं, अप्रैल से कद्दू की फसल आय देना शुरू कर देती है। मांग के अनुसार लहसुन के साथ ही मिर्च की भी बुवाई करती हूँ। 2 बीघा क्षेत्र में कलौंजी की फसल लेती हूँ। गर्मी के समय हरे धनिये के भाव अच्छे मिलते है। 2 बीघा क्षेत्र में इसका उत्पादन लेती हूँ। इससे 150 क्विंटल कद्दू, 6 क्विंटल कलौंजी, 50 क्विंटल लहसुन और 10-15 क्विंटल धनिये की उपज मिल जाती है। इस तरह सालभर में खर्च निकलने के बाद 5-6 लाख रूपए का शुद्ध मुनाफा हो जाता है। गौरतलब है कि इस किसान ने सहयोग के लिए दो मजदूरों को वर्षभर के लिये रोजगार दिया हुआ है। सिंचाई के लिए मेरे पास कुआं है। ड्रिप और मिनी फव्वारे से पानी अपव्यय कम होता है। खरीफ में सायोबीन की फसल आय देती है।

साभार हलधर टाइम्स। वर्ष 12। अंक 29। 22-28 मई 2017